DAV Sr. Sec. Public School Sector-8, Panchkula

FA IV Assignment **Class VII** **Subject: Hindi**

(बच्चे स्वंय अपना अनुभव लिखें) पाठ – 21 कर्मवीर (कविता)

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. सच है विपत्ति...बनाते हैं

प्र.1. विपत्ति के सामने आने पर कौन डर जाते हैं?

उ. विपत्ति के सामने आने पर कायर और डरपोक व्यक्ति डर जाते हैं। और घबराकर धीरज खो बैठते हैं।

प्र.2. विपत्ति के सामने कौन विचलित नहीं होते?

उ. विपत्ति के सामने बहादुर और सूरमा (वीर) परेशान नहीं होते और धीरज नहीं खोते।

प्र.3. कौन विघनों को गले लगा लेता है?

उ. वीर, साहसी तथा बहादुर व्यक्ति विघनों तथा मुसीबतों से नहीं घबराते अपितु मुसीबत भरे जीवन में भी अपने जीवन का रास्ता खोज़ ही लेते हैं।

2. मुँह से न कभी...विपत्ति पर छाते हैं।

प्र.1. वीर व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है?

उ. वीर व्यक्ति मुसीबतों का जीवन नहीं जीते अपितु मुसीबतों को समाप्त करके आगे बढ़ जाते हैं।

प्र.2. कर्मवीर व्यक्ति मुसीबतों में भी 'उफ' क्यों नहीं कहते?

उ. कर्मवीर व्यक्ति जानते हैं कि हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से मुसीबते समाप्त नहीं होंगी। इसलिए लगातार मेहनत तथा कार्य करके अपना जीवन सरल बना ही लेते हैं।

प्र.3. ''शूलों का मूल नसाना'' का क्या अर्थ है?

उ. कर्मवीर व्यक्ति अपने जीवन में आई मुसीबतों को जड़ से समाप्त कर देते हैं। और विपत्तियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते।

3. है कौन विघन ऐसा...जाता है।

प्र.1. कर्मवीर व्यक्ति के रास्ते में कौन टिक नहीं सकता?

उ. कर्मवीर व्यक्ति अपने परिश्रम और साहस के बल पर बड़ी दृढता से संसार की मुसीबतों को समाप्त कर देता है इसलिए मुसीबत और बाधाएँ उसके सामने नहीं टिक पाती।

प्र.2. ''पर्वत के पाँव उखड़'' से कवि का क्या अर्थ है?

उ. कवि कहता है कि कर्मवीर के सामने बड़ी से बडी मुसीबतें भी ठहर नही पाती और स्वंय ही कर्मवीर का जीवन सरल बना देती है।

प्र.3. कवि ने इस काव्यांश में मनुष्य की क्या विशेषता बताई है?

उ. कवि कहते हैं कि मानव में इतनी शक्ति है कि ज बवह मन में कुछ करने की ठान लेता है तो पत्थर भी पानी बन जाता है अर्थात् कोई मुसीबत उसके मार्ग में रूकावट नहीं बनती।

4. गुण बड़े एक से एक...नहीं वह पाता है।

प्र.1. मनुष्य में कौन–कौन से गुण छिपे पड़े हैं?

उ. मनुष्य बुद्धिमान, निष्ठावान, दृढनिश्चयी, कर्मठ, परिश्रमी तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी है। इन्हीं गुणों के आधार पर उसने संसार में अपना नाम रोशन किया है।

प्र.2. कवि ने मनुष्य के भीतर छिपे गुणों की समानता किससे की है?

उ. जिस प्रकार मेंहदी में लालिमा तथा दीपक की बत्ती में रोशनी छिपी होती है। मेंहदी को कूटने से लालिमा तथा बत्ती को जलाने से रोशनी प्राप्त होती है। उसी प्रकार मनुष्य के गुण भी संघर्षो तथा विघनों में ही प्रकट होते हैं।

प्र.3. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है?

उ. कवि कहते हैं कि मनुष्य गुणों का स्वामी है। उसे जीवन में आने वाले दुखों तथा विघनों से घबराना नहीं चाहिए जो व्यक्ति परिश्रम करता है उसके सामने कोई भी मुसीबत टिक नहीं सकती। ऐसे व्यक्ति कठिनाइयों में भी लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं। उसकी कोशिशों से बड़ी से बडी मुश्किलें भी आसान हो जाती है।

पाठ्य पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्र.1. कठिनाई के समय वीर और कायर व्यक्ति कैसा व्यवहार करते है?

उ. कठिनाई के समय वीर व्यक्ति घबराता नहीं है। वह लगातार परिश्रम करता रहता है। उन्हें समाप्त करने के उपाय में लग जाता है इसलिए बडी से बडी मुसीबतें भी उसकी रूकावट नहीं बन पाती। इसके विपरीत कायर व्यक्ति घबराकर मानसिक संतुलन खो देता है। संघर्ष तथा परिश्रम करना बंद कर देता है। और लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता।

प्र.2. मनुष्य को विपत्ति का सामना किस प्रकार करना चाहिए?

उ. हर मनुष्य के जीवन विपत्ति के क्षण आते ही है। इनसे घबराकर धीरज नहीं खोना चाहिए। निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए। मुस्कुराते हुए हर मुसीबत का सामना करना चाहिए जिससे वे मुसीबतें भी सहन करने योग्य बन जाती है।

प्र.3. मनुष्य के भीतर छिपे गुणों का वर्णन करने के लिए कवि ने किन उदाहरणों का आश्रय (सहारा) लिया है?

उ. कवि ने दीपक की बत्ती तथा मेंहदी की लालिमा का उदाहरण देते हुए कहा है कि जब तक मेंहदी को पीसा नहीं जाता उसका लाल रंग दिखाई नहीं देता उसी प्रकार दीपक को बत्ती को जब तक जलाया नहीं जाता, वह रोशनी प्रदान नही करती। मनुष्य भी जब संघर्षो से गुजरता है तभी अपने भीतर छिपे गुणों को पहचान पाता है।

प्र.4. ''बत्ती जो नहीं जलाता है, रोशनी नहीं वह पाता है '' पंक्ति का क्या आशय है। रोशनी को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है?

उ. दीपक की बत्ती को जलाए बिना रोशनी प्राप्त नहीं की जा सकती, इसी प्रकार संघर्ष किए बिना जीवन के सही लक्ष्य तथा अपने भीतर छिपे गुणों का पता नहीं लगाया जा सकता। जो संघर्षो से घबरा जाते हैं और परिश्रम करना छोड़ देते है वे जीवन के लक्ष्य को भी प्राप्त नहीं कर पाते।

प्र.5. संकट के समय मनुष्य को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए?

उ. संकट के समय मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए। परिश्रम करना चाहिए। लगातार मुस्कुराकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। मुसीबतों तथा संकट के आने पर कर्म करना नहीं छोड़ना चाहिए अपितु निरंतर कर्म में लगे रहकर विध्नों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मूल्य परक प्रश्न

प्र1. ''कर्म ही पूजा है''- कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए

उ. मनुष्य प्राचीन काल से आज तक परिश्रम करते हुए ऊँचाइयों तक पहुँचा है। आज का आधुनिक युग और सुख सुविधा के साधन मनुष्य के परिश्रम की ही देन है। हम सभी जानते हैं जो मनुष्य कर्म में लगे रहते हैं वे विपत्ति को हराकर लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। जिसने कर्म को ही पूजा मानकर जीवन भर अपनाया है वह जीवन में ऊँचाइयों तक पहुँचा है। विद्यार्थी जीवन में तो यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कर्म अर्थात् विद्यया (पढ़ाई) को पूजा मानकर ग्रहण करना चाहिए। जो व्यक्ति केवल स्वप्न देखते हैं और कर्म नही करते वे सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकते। कर्म में लगातार तत्पर रहने वाला व्यक्ति ही संसार में अपना नाम रोशन कर पाता है।